



स्थनः ब्रह्मणा को चारो दक षाई वरुन ॥ गोपिचंद्र सर्वगः लि
प्रागं हीच नर्न ॥ चारो दक समा पीव दृष्टा च क्षुर्न मीलयेत् ॥ ५ ॥ गी
ता वाप ठते नित्यं तुलशी च विभूषणी ॥ शीख धेखा ठादिके भेष दृष्टा च
क्षुर्न मीलयेत् ॥ अग्नि होत्र गृहे यस्य देवो यथा तत्परं ॥ त्रिका संक्रि
यते संध्या दृष्टा च क्षुर्न मीलयेत् ॥ ७ ॥ तस्मा मनुष्य कनतिमिह

ति भुलो के वै ध्वानी परित्यजेत् ॥ अथैव ध्वं च गृहीयात् अन्याया
ध्वं प्रवृत्तः ॥ १ ॥ यम इत उवाच ॥ यमराजा के उ इत इति गच्छ न ह
महा राज कस्तो को न रूप गतिव स्या कालाई देवे सव धर्मात्मा भनिक
स्तो को न रूप गतिव द भ्या नाई पा पात्मा भनि जानु यो हामि हर ले
था हा पा यो न त पाई ले विस्तो त सवे आशा गर्नु हवस ॥ २ ॥ यम इ

ताउउ ॥ ॥ किंरूपवैश्रवानांच वैश्रवानांकथं प्रभो ॥ तदुक्तं श्री
जः म तुमि शमि तन्मे वीहच मे प्रभो ॥ २ ॥ यमराज उवाच ॥ हे दुत हो सुन
१ जस्को घर मा प्रतिप्रता स्याद भी सत्यपादि पुरुष बहु न न फेरि अतीत
सुम्मा हात हल्लाई पुजा भोले नगराई देउना का भक्ति पतिरि वर भते राम
लोते सा मनुष्ये हर लाई धर्मात्मा ते सा का घर मा हउ पनि देन ॥ ३ ॥ २

हे दुत हो सुन जस्को घर मा प्रतिप्रता स्याद भी सत्यपादि पुरुष बहु न
न फेरि अतीत सुम्मा हात हल्लाई पुजा भोले नगराई देउना का भक्ति प
ति गोरि वर भते सा ते सा मनुष्ये हर लाई धर्मात्मा ते सा का घर मा हउ प
नि देन ॥ ३ ॥ यमराज उवाच ॥ ॥ प्रतिप्रता गृहे यस्य सत्यपादि स
यनाः ॥ अतिथि पूज्यतो नित्यं दृष्ट्वा च क्षुर्न मीलयेत् ॥ ३ ॥ कपिलो

जमः पालयेधेनु गोमये गृहजपयेत् ॥ लिखित्यादे लुपेत्तु दृष्टाचक्षुर्नमी
लेयेत् ॥ ४ ॥ हे हुतफेरि जस्को घुसा कैलो गाई पारिषदं न भुईमा
गोवाले लिपि राखछ तेला काद्या मातिमि हल्ले हेर्न पनि छैन ॥ ४ ॥
हे हुत सुन जस्मनु बेल आफना सर्वांग सरिमा गोपि चंदन लेपन ग राम
रिषछन् अथ देवता लाई चहायाको चन्दन दि फल माला लाई व ३